बनो तुम इंसानियत की फूल

आजा मेरे प्यारे, बैठो मेरे गोद में
मैं सुनाऊँ तुम्हे कुछ बात।'
कही माँ बच्चे से।
'न जाने कब खिलोगे तुम,
न जाने कब फूलोगे तुम,
न जाने कब बनोगे तुम
इंसानियत की फूल।'
उस प्यारा सा गाल को धीरे से
छूकर, फिर एक बार कही माँ,
'जल्दी से खिलो मेरी प्यारी कली,
और बन जाओ इनसानियत की फूल!
जो निकालता है प्यार की खुशबू,
जो निकालता है इनसानियत की प्रकाश,
जो बनाता है इस बुरे बगीचे को खुशबूदार।
तुम मत बनो उन जानवरों के जैसा
जो तोड़ता है प्यारी कलियाँ को,
जो काटता है प्यारी कलियाँ को।
तुम्हें ~~खिलकर~~ जल्दी से खिलकर घूमना है उनसे,

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

"तुमने यह किया क्यों?"
"इससे क्या मिला तुम्हें?"
"इस दुनिया के आखरी उम्मीद को
क्यों तोड़ा तुमने?"
फिर पूछा उस बेटा, माँ से,
"क्या किया इस जानवर ने?"
तब टपके माँ की आँख से
दुख की और दर्द की बूँद!
और कही माँ,
"प्यारे! वह तोड़ा मेरी नन्ही सी फूल को!
उसने काट लिया उसकी प्यारी पत्तों को!
उसने तोड़ लिया उसकी प्यारी मुस्कान को!
उस प्यारी, मुलायम गालों को कैसे तोड़ा उसने?
इसलिए तुम मत बनो उन जानवर जैसा,
जो तोड़ता है कलियाँ को,
जो निकालता है खुशबू, बुराई की!
कैसे हटाएगा बोझ वह
उस पाप की पन को?
कभी नहीं कर पाएगा वह!

उसके जैसे बुरे जानवर
बनाता है इस बगीचे को
अंधेरा से भरी।
उन जैसा जानवरों का
काटना है हाथ-पाव,
तोड़ना है आँख-दात।
मेरे प्यारे, बनो तुम अच्छे फूल
जो पीटता है उन्हें,
जो मारता है उन्हें।'
तब उठ गया बच्चे
माँ की गोद से,
और कहे वह,
माँ, मैं उन्हे पीटूँगा,
मैं उन्हे मारूँगा,
मैं काटूँगा उनका हाथ-पाव,
मैं तोड़ूँगा उनका आँख-दात,
मैं पूछूँगा उनसे,
इससे "तुमने यह किया क्यों?"
"इससे क्या मिला तुम्हें?"

यह सुनकर माँ की चहरे में
आई मुसकान।
तब आया बच्चे के दिमाग में
एक सवाल!
उसने पूछा माँ से,
"माँ, कौन है यह जानवर?"
तब कही माँ,
'आजा मेरे प्यारे,
अभी भी बाकि है लंबी सफर...'
एक और बार बच्चे ने पूछा -
"माँ, कौन है यह जानवर?"
तब कही माँ,
"इंसान!...."